Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

पेपर – I || भाग – II

आधुनिक इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

आधुनिक इतिहास

1. भारत में ;jkfi;u शक्तियों का आगमन	**1**
2. उत्तरकालीन मुगल सम्राट	**10**
3. cxky	**14**
4. मराठा शक्ति का उत्कर्ष	**20**
5. लॉर्ड वैलेजली की सहायक संधि	**35**
6. अंग्रेजों की भू-राजस्व पद्धतियाँ	**43**
7. अंग्रेजों के न्यायिक सुधार	**47**
8. भारत में लोक सेवा का विकास	**50**
9. मैसूर	**54**
10. पंजाब	**56**
11. गवर्नर जनरल	**60**
12. भारत के गवर्नर जनरल	**65**
13. भारत के वायसराय	**71**
14. 1857 की क्रांति	**79**
15. सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन	**96**
16. राष्ट्रीय आंदोलन	**105**
17. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	**107**

18. 1909 का भारत परिषद् अधिनियम/मार्ले मिन्टो सुधार **117**

19. गांधी युग **121**

20. 1919 का भारत सरकार अधिनियम/मोण्टेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार **127**

21. भारत सरकार अधिनियम 1935 **139**

22. भारत में क्रांतिकारी आंदोलन **149**

23. विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन **151**

24. प्रमुख व्यक्तित्व **164**

25. भारत का संवैधानिक विकास **167**

आधुनिक इतिहास

आधुनिक भारत का इतिहास

भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन

– सत्रहवीं शताब्दी के दौरान भारत विदेशी व्यापार का एक ऐसा आकर्षण केन्द्र बन गया था कि हर विदेशी राष्ट्र व्यापार के माध्यम से उस पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता था । क्योंकि –

– भारत औद्योगिक माल के उत्पादन में एक अग्रणी राष्ट्र था ।

– यहाँ का उच्च कोटि का सूती एवं रेशमी कपडा, मसाले, नील, शक्कर, औषधियाँ एवं बहुमूल्य रत्न किसी भी राष्ट्र को लालयित करने के लिए काफी थे ।

– भारत में अग्रांकित यूरोपियन शक्तियाँ अपने हित साधने हेतु आयी –

पुर्तगाल	–	डच	–	अंग्रेज	–	डेनिश	–	फ्रांसीसी
(1498)		(1596)		(1600)		(1616)		(1664)

1. पुर्तगाली

- 1487 में 'बार्थोलेम्यू डियाज' ने उत्तम आशा द्वीप (द. अफ्रिका) की खोज की ।
- प्रथम पुर्तगाली यात्री 'वास्को - डी - गामा' था जिसने भारत की खोज (1498) की ।
- अब्दुल मनीक नामक गुजराती व्यक्ति उसका मार्गदर्शक था ।
- वास्को - डी - गामा पश्चिमी तट के कालीकट बन्दरगाह पर आया था ।
- कालीकट के जमोरिन (वहाँ का राजा) ने वास्को - डी - गामा का स्वागत किया ।
- वास्को - डी - गामा को भारत के साथ व्यापार में 60 गुना फायदा हुआ था ।
- 1502 में वास्को - डी - गामा दूसरी बार भारत आया ।
- 1524 में वास्को - डी - गामा की भारत में ही मृत्यु हो गई ।
- 1534 बसीनद्वीप व 1556 में श्रीलंका में व्यापारिक अधिकार स्थापित किया ।
- 1639 - मराठों द्वारा इनसे सालसेट व बेसीनद्वीप छीन लिए गए ।
- 1961 तक इनका गोआ, दमन व द्वीप पर अधिकार था ।
- पेड्रो अल्वारेज केबाल : दूसरा पूर्तगाली यात्री (1500 ई. में)
- 1503 में पूर्तगालियों ने कोचीन में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की ।
- पूर्तगालियों का प्रथम गर्वनर फ्रांसिस्को - डी - अल्मेडा भारत में 1505 में बनाया ।
- अल्फांसो - डि - अल्बुकर्क : द्वितीय पूर्तगाली गर्वनर 1509 में भारत आया ।
- पूर्तगालियों का भारत में वास्तविक संस्थापक था ।
- (1509 में) अल्बुकर्क ने कृष्णदेवराय (विजयनगर) के कहने पर बीजापुर के राजा युसुफ आदिल शाह से गोवा छीन लिया था ।
- 1530 में 'नीनो डि कुन्हा' ने कोचीन से अपनी राजधानी को गोवा में विस्थापित कर ली थी तथा 1961 तक गोवा पर पूर्तगालियों का शासन रहा ।
- पूर्तगाली भारत में स्थायी नहीं हो पाये थे ।

पूर्तगालियों के भारत में स्थायी नहीं होने के कारण :

1. पूर्तगालियों ने अपना ध्यान दक्षिणी अमेरिका पर लगा दिया था क्योंकि उन्हे ब्राजील में सोने की खाने मिल गई थी ।
2. अरब व्यापारियों ने पूर्तगालियों का विरोध किया था ।
3. पूर्तगालियों की धार्मिक असहिष्णुता की नीति थी ।
4. जबरन धर्मांतरण करवाते थे ।
5. अल्बुकर्क ने पुर्तगालियों को भारतीय महिलाओं के साथ शादी करने के लिए प्रोत्साहित किया था

नोट : 1542 में जेसुइट संत जेवियर (पादरी), अल्फांसो डी सूज़ा (गर्वनर) के साथ भारत आया था ।

नीले समुद्र की नीति :

– पूर्तगालियों का समुद्र पर एकाधिकार था । वे स्वयं को सागर का स्वामी कहते थें ।
पूर्तगालियों का सामुद्रिक साम्राज्य एस्तादो द इण्डिया कहलाता था ।

कार्ट्ज सिस्टम :

– समुद्र में किसी भी गतिविधि के लिए पूर्तगालियों से अनुमति लेनी पडती थी ।
– अकबर ने भी समुद्र देखने के लिए पूर्तगालियों से कार्ट्ज लिया था ।

आर्मेडा सिस्टम : (काफिला)

– पूर्तगाली भारतीय जहाजों को समुद्र में सुरक्षा प्रदान करते थें । इसके लिए अपने जहाज के साथ ही भारतीय जहाजों को भेजा करते थें ।

पूर्तगालियों के अन्य कार्य :

– पूर्तगालियों ने भारत में बडे जहाजों का निर्माण प्रारम्भ किया ।
– 1556 में गोवा में पहली बार प्रिंटिंग प्रेस (छापाखाना) लगाया गया ।
– मक्का और तम्बाकू की फसल बाद में पूर्तगालियों ने प्रारम्भ की ।
– स्थापत्य कला की ''गोथिक शैली'' प्रारम्भ की । (ऊँची उठी हुई छते)

विशेषता

– नुकीली मेहराब

– बारीक साज – सज्जा

2. डच

कार्नेलियन डे हस्तमान : पहला डच यात्री 1596 में भारत आया ।

- 1602 में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई ।

- 1605 में 'मसूलीपट्टनम' (पूर्वी तट पर) में पहली फैक्ट्री की स्थापना की ।

- 1653 में चिनसूरा (बंगाल) में फैक्ट्री शुरू की ।

- इस फैक्ट्री को गुस्तावास फोर्ट कहा जाता था ।

- 1759 में अंग्रेजो ने 'वेदरा के युद्ध' में डचों को हरा दिया था ।

- इसके बाद डचों ने इण्डोनेशिया पर अपना ध्यान केन्द्रित किया तथा मसालों का व्यापार करते थें । (वेदरा के युद्ध में अंग्रेजों का सेनापति रॉबर्ट क्लाइव था ।)

भारत में डेनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी

- डेनमार्क की ''ईस्ट इण्डिया कम्पनी'' की स्थापना 1616 ई. में हुई ।

- इस कम्पनी ने 1620 में त्रैकोंवार (तमिलनाडु) तथा 1667 में सेरामपुर (बंगाल) में अपनी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित कियें ।

- सेरामपुर डचों का प्रमुख केन्द्र था ।

- 1854 में डचों ने अपनी वाणिज्यिक कम्पनी अंग्रेजों को बेच दी ।

3. अंग्रेज

जॉन मिडेनहॉल (1599) : प्रथम अंग्रेज यात्री

- 31 दिसम्बर 1600 की ईस्ट इण्डिया कम्पनी (अंग्रेजी) की स्थापना की गई ।

  पूरा नाम (द कम्पनी एण्ड गवर्नर ऑफ मर्चेन्ट्स ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इनटू द ईस्ट इण्डिया) और (मर्चेन्ट एडवेंचर)

- यह एक निजी कम्पनी थी ।

- इसमें 217 शेयर हॉल्डर्स थें ।

- महारानी ऐलिजाबेथ प्रथम ने कम्पनी को भारत में व्यापार के लिए 15 वर्षो का एकाधिकार दिया । कालान्तर में इसे 20-20 वर्षों के लिए आगे बढाया गया ।

- 1608 में इंग्लैण्ड के राजा जैम्स प्रथम का राजदूत कैप्टन हॉकिन्स मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में आया ।

  वह फारसी भाषा का जानकार था ।

  जहाँगीर ने इसे 400 का मनसब दिया था । लेकिन वह व्यापारिक रियायतें प्राप्त नहीं कर पाया था ।

- 1615 में सर टॉमस रो भारत आये (द्वितीय राजदूत भारत आये) 10 जनवरी 1616 को अजमेर में जहाँगीर से मुलाकात की तथा व्यापारिक रियायते प्राप्त करने में सफल रहा । (लेकिन वास्तव में ये रियायते गुजरात के गवर्नर खुर्रम (शाहजहाँ) ने दी थी)

- 1608 में सूरत में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की ।

  संस्थापक : हेनरी मिडलटन

  1611 में मसूलीपट्टनम में फैक्ट्री की स्थापना की । (यह पूर्वी तट पर प्रथम अंग्रेजी फैक्ट्री थी ।)

- 1632 में गोलकुण्डा के सुलतान ने 500 पैगोडा के बदले सुनहरा फरमान दिया ।

- 1633 में हरिहर में फैक्ट्री की स्थापना की गई ।

- अंग्रेजो ने चन्द्रगिरि के राजा से चैन्ने नामक गाँव खरीदा तथा यहाँ पर 1639 में मद्रास की स्थापना की ।

  यहाँ पर सेन्ट जॉर्ज नामक किला बनाया गया ।

  मद्रास का संस्थापक : फ्रांसिस डे था ।

- 1651 में ब्रेवियन वांटन ने शाह शुजा (औरंगजेब का भाई) से बंगाल में व्यापार की अनुमति प्राप्त की ।

- इंग्लैण्ड के राजकुमार चार्ल्स द्वितीय की शादी पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ हुई तथा बॉम्बे दहेज में दिया गया । (1661 में)

- इंग्लैण्ड के राजा ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को 10 पौण्ड किराये पर दे दिया ।

- 1668 में बॉम्बे में फैक्ट्री की स्थापना की ।

  बॉम्बे का संस्थापक ⟶ गैरोल्ड आंगियार

- बंगाल में सुतानाती, कलिकाता, गोविन्दपुर नामक 3 गाँव 12,000 रूपये में खरीदें ।

  1698 में यहाँ कलकत्ता (कलिकाता) में फैक्ट्री की स्थापना की गई । यहाँ पर फोर्ट विलियम बनाया गया ।

  संस्थापक : जॉब चारनाक

  कलकता का पहला गर्वनर : चार्ल्स आयर

- 1717 में जॉन सरमन के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल मुगल बादशाह फर्रूखसियर से मिला

  इस प्रतिनिधि मण्डल में डॉ. हेमिल्टन तथा एक दुभाषिया ख्वाजा सेहुर्द (आर्मेनिया) था ।

  यहाँ फर्रूखसियर ने कम्पनी को कई व्यापारिक रियायते दी ।

  1. 3000 रूपये में बंगाल में व्यापार की छूट ।
  2. 10000 रूपये में सूरत बन्दरगाह से व्यापार की छूट
  3. अंग्रेजो के बॉम्बे टकसाल के सिक्कों को मान्यता दी गई ।
  4. अंग्रेज कलकत्ता के आस-पास जमीन खरीद सकते है ।

  इतिहासकार और्म्स ने इस समझौते को कम्पनी का मैग्नाकार्टा कहा ।

4.डेनिश

- 1616 में डेनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना ।

  मुख्य केन्द्र : सीरामपुर (बंगाल)

5. फ्रांसिसी

- 1664 में फ्रांसीसी ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की गई ।

  यह कम्पनी राजा लुई 14 के वित्त मंत्री कोल्बर्ट ने बनाई थी

  नोटः- यह कम्पनी एक 'सरकारी कम्पनी' थी ।

- 1668 में सूरत में पहली फैक्ट्री की स्थापना की ।

  संस्थापक : फ्रेंको कैरो

- 1669 में मसूलीपट्टम में फैक्ट्री की स्थापना की ।

- 1673 में पुदुचेरी गाँव खरीदा तथा यहाँ पर पाण्डीचेरी की स्थापना की ।

  यहाँ पर फोर्ट लुई की स्थापना की गई ।

  संस्थापक : फ्रेंक्वा मार्टिन

- 1674 में बंगाल में चन्द्रनगर नामक गाँव खरीदा ।

- यहाँ पर 1690-92 के दौरान फैक्ट्री की स्थापना की गई ।

अंग्रेज फ्रांसीसी संघर्ष

- अंग्रेजो तथा फ्रांसीसीयों के बीच 3 युद्ध हुये थे जिन्हें कर्नाटक युद्ध कहा जाता है ।

- (कर्नाटक, तमिलनाडु में एक रियासत थी जिसकी राजधानी अरकाट थी)

1. प्रथम कर्नाटक युद्ध : (1746-1748)

कारण : ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार

- अंग्रेजी कप्तान बारनेट ने फ्रांसिसीयों के जहाज पकड लिये थें ।

- फ्रांसिसी गवर्नर डुप्ले मॉरिशस से लॉ बूर्दने को बुलाता है ।

  दोनों ने मिलकर मद्रास (उस समय अंग्रेजो का सबसे बडा केन्द्र था) को घेर लिया, लॉ बूर्दने, धन लेकर मद्रास अंग्रेजो को दे देता है लेकिन डुप्ले ने पुनः अधिकार कर लिया

- एक्स ला शापेल की सन्धि द्वारा यह युद्ध समाप्त हो गया ।

- अंग्रेजो को मद्रास वापस दे दिया गया था । लेकिन इस युद्ध में फ्रांसिसीयों की जीत हो गई थी ।

- सेन्ट टोमे का युद्ध : फ्रांसीसी वर्सेज अनवरूद्दीन (कर्नाटक का राजा)

  सेनापति : पेराडाइज महफूज खाँ इसमें फ्रांसिसीयों की जीत हुई ।

2. दूसरा कर्नाटक युद्ध : (1749–1754)

कारण : भारतीय रियासतों का आन्तरिक संघर्ष

रियासत	राजा	राजा
1. कर्नाटक	अनवरूद्दीन (सहायक – अंग्रेज)	चन्दा साहिब (सहायक – फ्रांसिसी)
2. हैदराबाद	नासिर जंग (सहायक – अंग्रेज)	मुजफ्फर जंग (सहायक – फ्रांसिसी)

अम्बूर का युद्ध – 1749

- फ्रांसिसी, चान्दा साहिब, मुजफ्फर जंग से मिलकर अनवरूद्दीन को मार दिया ।

- थोडे दिन बाद नासिर जंग भी लडता हुआ मारा गया था ।

- मुजफ्फरजंग ने डुप्ले को कृष्णा नदी के दक्षिण का भाग दिया तथा बस्सी के नेतृत्व में एक सेना (फ्रांसिसी) हैदराबाद में रखी गई ।

- इस प्रकार भारत में सहायक सन्धि की शुरूआत डुप्ले ने की थी ।

- कालान्तर में इस अंग्रेजी गर्वनर जनरल वेलेजली ने बडे तौर पर लागू किया था ।

- अब तक इस युद्ध में फ्रांसिसीयों की जीत हुई । लेकिन रॉबर्ट क्लाइव अपने 210 सैनिकों के साथ अरकाट को जीत लेता है । इसके बाद फ्रांसिसी हारने लगते है ।

- डुप्ले को हराकर गोडेहू को नया फ्रांसिसी गर्वनर बनाया गया ।

- गोडेहू ने अंग्रेजो से पाण्डुचेरी की संन्धि कर ली तथा युद्ध समाप्त हो गया ।

- इस युद्ध में अन्त में अंग्रेजो की जीत हुई थी ।

3. <u>तीसरा कर्नाटक युद्ध :</u> (1756-63)

कारण: कनाडा पर अधिकार करने के लिए इंग्लैण्ड और फ्रांसिसीयों के बीच सात वर्षीय युद्ध

<u>वाडीवाश का युद्ध (1760)</u>

अंग्रेज वर्सेज फ्रांसिसी

↓ ↓

आयरकूट लाली और बुस्सी

इस युद्ध में फ्रांसिसी निर्णायक रूप से हार गये थें । अंग्रेजो ने पाण्डिचेरी पर भी अधिकार कर लिया था ।

- पैरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हो गये ।

- चन्द्रनगर को छोडकर शेष बस्तियाँ फ्रांसिसीयों को वापस लौटा दी थी ।

नोट: 1693 में डचों ने पाण्डीचेरी पर कब्जा कर लिया था । लेकिन बाद में रिजविक समझौते द्वारा पाण्डीचेरी पुनः फ्रांसिसीयों को दे दिया गया था ।

- फ्रांसीसियों के पास फोर्ट सेन्ट डेविड एक अंग्रेजी बस्ती थी ।

स्वीडिश

- 1731 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की ।

उत्तरकालीन मुगल साम्राट

1. बहादुर शाह (1707–12)
2. जहाँदार शाह (1712–13)
3. फर्रूखसियर (1715–19)
4. रफी उद् दरजात (1719)
5. रफी उद् दौला (1719)
6. मुहम्मदर शाह रंगीला (1719–48)
7. अहमदशाह (1748–54)
8. आलमगीर द्वितीय (1754–59)
9. शाह आलम द्वितीय (1759–1806)
10. अकबर द्वितीय (1806–37)
11. बहादुर शाह द्वितीय (1837–57)

1. बहादुरशाह – प्रथम (1707–12)

- वास्तविक नामः मुअज्जम
- अपने भाई आजम को जाजऊ के युद्ध में हराकर बादशाह बनता है ।
- सर्वाधिक उम्र में मुगल बादशाह बना था । (63 वर्ष में)
- इसने जोधपुर के राजा अजीतसिंह तथा सिख गुरू गोविन्द सिंह के साथ समझौता किया ।
- उपाधि : शाहे – बेखबर
- सिडनी ओवेन के अनुसार अन्तिम मुगल बादशाह था जिसके बारे में अच्छे शब्द कहे जा सकते हैं ।

2. जहाँदारशाह (1712–13)

- जुल्फिकार खाँ की मदद से बादशाह बना ।
- जुल्फिकार खाँ को इसने अपना प्रधानमंत्री बनाया ।
- लाल कुँवर नामक महिला इसके शासनकाल में हस्तक्षेप करती थी ।
- उपाधि : लम्पट मूर्ख

3. फर्रूखसियर (1713–1719)

- सैय्यद बन्धुओं की मदद से बादशाह बना ।

अब्दुल्ला खाँ → वजीर

हुसैन अली → मीर बख्शी ।

- सिख नेता बन्दा बहादुर की निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी गई थी ।
- इसने अंग्रेजो तथा मराठों के साथ समझौते किये थें ।
- उपाधि : घृणित कायर
- सैय्यद बन्धुओं ने इसकी हत्या कर दी थी ।

4. रफी उद् दरजात (1719)

- सैय्यद बन्धुओं की मदद से राजा बना ।
- मुगल बादशाह में सबसे कम शासनकाल (4 महीने) रहा ।
- क्षय रोग (टी.बी) से उसकी मृत्यु हो गई थी ।

5. रफी उद् दौला (1719)

- सैय्यद बन्धुओं की मदद से बादशाह बना ।
- उपाधि : शाहजाह – द्वितीय
- पेचिश रोग से इसकी मृत्यु हो गई थी ।

6. मुहम्मद शाह रंगीला (1719–1748)

- सैय्यद बन्धुओं की मदद से राजा बना ।

  (सैय्यद बन्धुओं को किंग मेकर कहा जाता था)

- इसने तुरानी अमीरों (ईरान के पास का क्षेत्र) की सहायता से सैय्यद बन्धुओं की हत्या करवा दी ।

- इसके समय में मुगल साम्राज्य कई भागों में विभक्त हो गये थें ।

मुगल साम्राज्य	बादशाह	(उपाधि)
- अवध	सआदत खाँ	(बुरहान - उल - मुल्क)
- हैदराबाद	चिनकिलच खाँ	(निजाम - उल - मुल्क)
- कर्नाटक	सआदत उल्ला खाँ	
- बंगाल	मुर्शिद कुली खाँ	
- रूहेलखण्ड	वीर दाउद (अली मुहम्मद खाँ)	
- भरतपुर	बदनसिंह	

- 1739 में ईरान के राजा नादिरशाह (ईरान का नेपोलियन) ने आक्रमण किया (भारत पर)
- करनाल के युद्ध में मुगल सेनाओं को हरा दिया ।
- नादिरशाह कोहिनूर हीरा तथा मयूर सिंहासन ले गया था ।
- अहमद शाह अब्दाली का प्रथम आक्रमण हुआ था । (1748)
- इसके दरबार में सदारंग तथा अदारंग नामक संगीतकार थें ।
- उर्दू शायरी का जनक वली दक्कनी इसके दरबार में था ।

7. अहमद शाह (1748-1754)

- इसका वजीर सफदरजंग अवध का नवाब था ।
- उधमबाई नामक नृतकी इसके शासन कार्य में हस्तक्षेप करती थी । जावेदखान नामक एक हिंजडा इसके दरबार में प्रभाव रखता था ।
- इमाद - उल - मुल्क ने इसे अंधा कर दिया था ।

8. आलमगीर - द्वितीय (1754-1759)

- इमाद - उल - मुल्क ने इसकी हत्या कर दी थी ।

9. शाहआलम – द्वितीय (1759–1806)

- इसने 1764 में बक्सर के युद्ध में भाग लिया था ।
- 1765 – 72 तक इलाहाबाद में अंग्रेजो से पेंशन लेकर रहता था ।
- 1762 में महादजी सिंधिया की सहायता से दिल्ली गया ।
- 1803 में अंग्रेजो ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया ।

10. अकबर – द्वितीय (1806–1837)

- इसके समय में मुगल सिक्के बन्द हो गये थें ।
- राजा राम मोहन राय को राजा की उपाधि दी थी ।

11. बहादुरशाह – द्वितीय (1837–1857)

- यह जफर नाम से कविताऐं लिखता था ।
- अपनी बेगम जीनत महल के प्रेरित करने पर उसने 1857 की क्रान्ति का नेतृत्व किया ।
- अंग्रेजो ने इसे पकडकर रंगून भेज दिया था ।
- 1862 में इसकी मृत्यु रंगून में हो गई ।

बंगाल

1. मुर्शीद कुली खाँ

- इसने मुर्शीदाबाद को बंगाल की राजधानी बनाया था ।

2. अली वर्दी खाँ

- यह बिहार का गर्वनर था, इसने बंगाल के नवाब सरफराज को धेरिया के युद्ध में मार दिया तथा बंगाल का नवाब बन गया ।
- इसने यूरोपियन की तुलना मधुमक्खियों से की थी ।

3. सिराजुद्दौला

- यह अलीवर्दी खाँ का दोहिता था ।

सिराजुद्दौला के विरोधी :-

1. मौसी – घसीटी बेगम
2. पूर्णिया का नवाब – शौकत जंग
3. सेनापति – मीर जाफर
4. सेठ – जगतसेठ
5. रायदुर्लभ

- इन विरोधियों की कम्पनी के साथ मित्रता थी ।
- दस्तक : कर में दी जाने वाली छूट के लिए लाइसेंस

  कम्पनी ने दस्तक का दुरूपयोग करना प्रारम्भ कर दिया था । अंग्रेजो ने नवाब को कासिम बाजार फैक्ट्री का निरीक्षण करने नहीं दिया था । नवाब ने कलकत्ता पर अधिकार कर लिया एवं उसका नाम अलीनगर कर दिया । तथा कलकत्ता माणिकचन्द्र को सौंप दिया ।

  मद्रास से क्लाइव कलकत्ता आया तथा माणिकचन्द्र ने कलकत्ता उसे सौंप दिया ।

अलीनगर की संधि (9 फरवरी, 1757) :-

सिराजुद्दौला तथा क्लाइव के मध्य